शाला का नक्शा

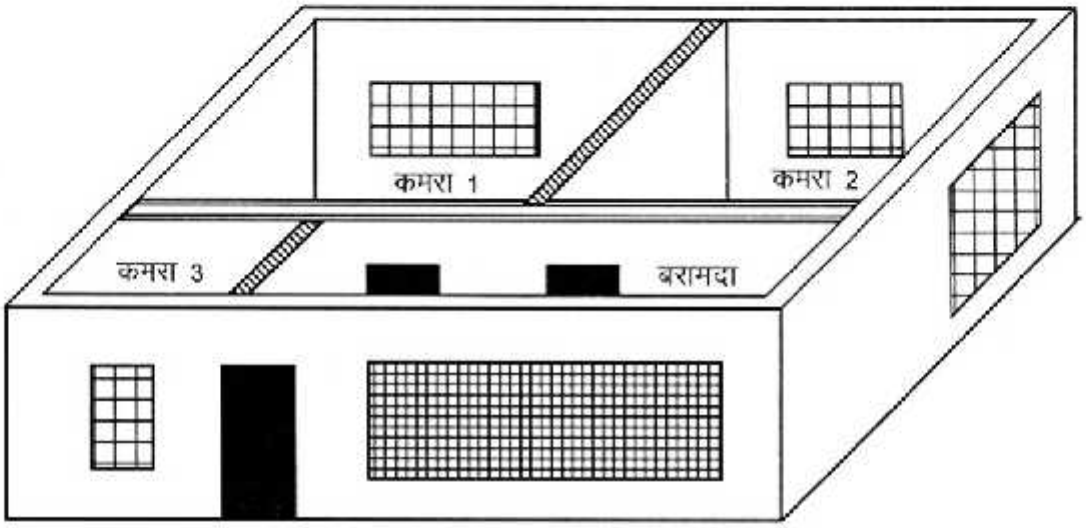

चित्र और नक्शा

चित्र और नक्शे में बहुत अंतर है।

1. चित्र में आमतौर पर चीज़ें वैसे बनती हैं जैसे वे दिखती हैं। नक्शे में चीज़ें चिह्न या संकेत से दिखायी जाती हैं।

2. चित्र में आमतौर पर चीज़ें इस तरह से बनाई जाती हैं जैसे कोई उस जगह को उसके किनारे खड़े होकर उन्हें देख रहा हो। नक्शा हमेशा ऐसा बनाया जाता है जैसे उस जगह को ऊपर या आसमान से देख रहें हों। ऊपर एक शाला का नक्शा दिया हुआ है और उसी शाला का नक्शा नीचे दिया है। नक्शे में कमरा नं लिखो और खिड़की और दरवाज़ा भी सही जगह लिखो।

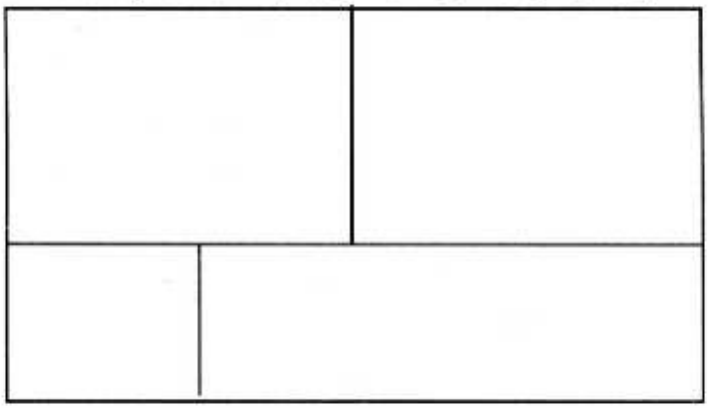

नक्शा कैसे बनता है?

तुम्हें माचिस की तीलियां और चॉकपीस चाहिए होगा।

पैमाना

नक्शा बनाने के लिए एक तीली को एक कदम के बराबर माना। नक्शे में अगर कोई दूरी एक तीली है तो वास्तव में कमरे में वह एक कदम के बराबर है। तो यह तुम्हारे नक्शे का पैमाना हुआ।

उदाहरण के लिए मेरी कक्षा की उत्तरी दीवार 10 कदम थी तो नक्शे में उत्तरी दीवार 10 तीलियों लंबी होगी। नीचे दिए गए नक्शा को ध्यान से देखो और बताओ कि मेरी कक्षा कौनसी है।

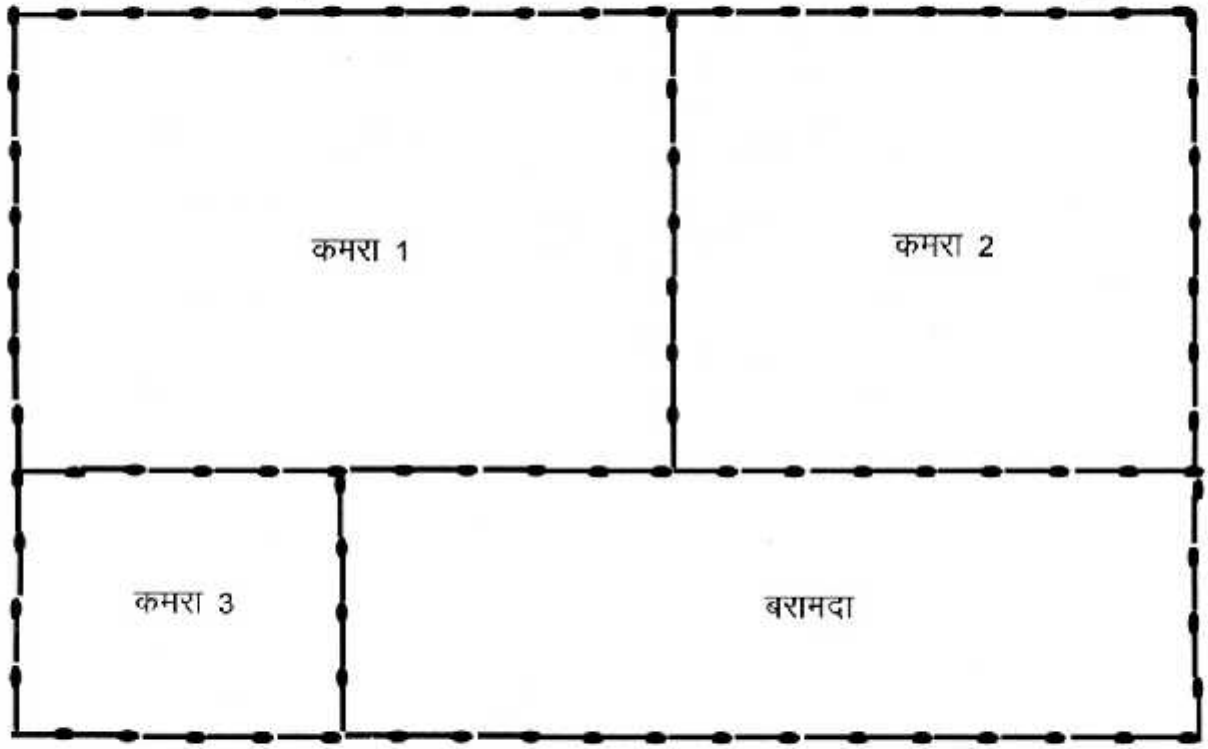

कक्षा नापो

अपनी कक्षा का एक छोटा सा नक्शा बनाना है। पहले कक्षा की लंबाई चौड़ाई नापेंगे और उसके अनुरूप हम छोटा नक्शा बनाएँगे। पहले उत्तरी दीवार को कदम से नापेंगे।

यह कितने कदम लम्बी दीवार है?पैमाना है - एक कदम बराबर एक तीली। यानी एक माचिस की तीली को एक कदम के बराबर मान लेते हैं।

एक कदम बराबर एक तीली के हिसाब से तीलियों को लाईन से लगा लो। तीलियों को सटा कर लगाना,बीच में जगह न छूटे, इस तरह तुम्हारी उत्तरी दीवार बनेगी।

तुम्हारी कक्षा की उत्तरी दीवार कितने कदम की है?

फिर पूर्वी दीवार नापो। यह कितने कदम लंबी है? दक्षिणी दीवार कितने कदम और पश्चिमी दीवार कितने कदम लम्बी निकली।

जब तीलियों से चारों दीवारें बन जाएँ तो चॉक से उनके चारों और रेखा खींचो। फिर तीलियों को हटा दो।

अब शाला के अन्य कमरे कदम से नापो। इन्हें भी एक कदम बराबर एक तीली के हिसाब से बनाओ। तुम्हारी कक्षा की जो दीवार दूसरी कक्षा से जुड़ी है। उसे नक्शे में भी वहीं बनाना।

इस तरह अन्य कक्षाएँ और बरामदा बनाकर शाला का नक्शा पूरा करो

मेरी गली, तुम्हारी गली

मेरा गाँव काफी बड़ा है। उसमें बहुत से घर हैं, दुकानें हैं, खेत भी हैं। इस गाँव में बहुत सी गलियाँ हैं। बड़ी–छोटी, चौड़ी भी और संकरी भी। मैं जिस गली में रहती हूँ उसका नक्शा दे रही हूँ।

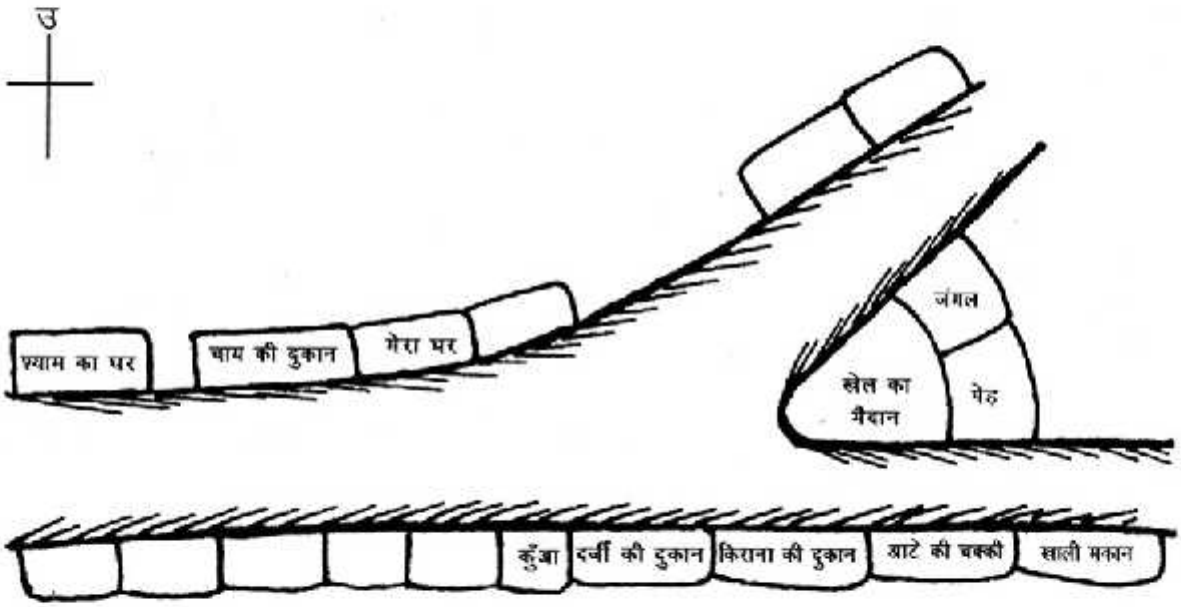

ऊपर बने गली के नक्शे के बारे में वाक्य अपनी कापी में लिखो।

1. *जैसे – मेरी गली में एक दर्जी की दुकान है।*
   दर्जी की दुकान की पूर्व दिशा में किराना की दुकान है।
2. *(क) दर्जी की दुकान की पश्चिम दिशा में क्या है?*
   (ख) आटा की चक्की की उत्तर दिशा में क्या–क्या है?
   (ग) श्याम के घर की दक्षिण दिशा में एक प्राथमिक शाला बनाओ।
3. *अपनी गली का ऐसा ही नक्शा बनाओ। घर पहुँचकर नक्शे को अपनी गली से मिला कर देखो।*
4. *क्या तुमने हर दुकान मकान और सभी चीजें बनाई हैं? अगर कुछ छूट गया हो तो उन्हें बना लो।*
5. *मेरे नक्शे और अपने नक्शे में बनी चीजों व जगहों के लिए उपयुक्त चिन्ह सोचो। कॉपी में इन चिन्हों का इस्तेमाल कर यह नक्शे बनाओ।*

उदाहरण

ऐसे चिन्ह सभी दर्शायी जगहों। चीज़ों के बारे में सोचो।

ग्राम पंचायत

हम सब घरों में रहते हैं। कुछ लोगों के पास खेत, ढोर आदि भी हैं। इन सबकी देखभाल कौन करता है? क्या कोई बाहर से आता है? नहीं न? हम स्वयं ही उनका ख्याल रखते हैं। घर की मरम्मत, ढोर की दवा, खाना–पीना आदि खुद ही देखना होता है।

लेकिन कुछ चीज़ें ऐसी हैं जो न मेरी हैं न तुम्हारी। इन्हें सभी इस्तेमाल करते हैं। सोच सकते हो क्या?

शाला, सड़कें, कुएँ, हैंडपम्प, पुल– इनको सब इस्तेमाल करते हैं। ये तुम्हारी या मेरी व्यक्तिगत चीज़ नहीं हैं।

तो फिर इनकी देखभाल कौन करे? सरकार ने ग्राम या गाँव पंचायत बनाने के बारे में सोचा। एक ग्राम पंचायत कुछ गाँवों के लिए बनती है और उन गाँवों की ज़िम्मेदारी लेती है। पंचायत में भी गाँव के ही लोग होते हैं। ये लोग इसलिये चुने जाते हैं कि ये ज़िम्मेदारी अच्छे से निभाएँगे। इन लोगों को कौन चुनता है? एक पंचायत में कितने लोग होते हैं? क्या हर गाँव की एक पंचायत होती है? इन बातों का पता तुम लगाओगे–ठीक!

अब अपनी पंचायत के बारे में भी कुछ बातें पता लगाओ–

1. *तुम्हारी पंचायत में कौन–कौन से गाँव के लोग हैं?*
2. *क्या उसमें महिलाएँ भी हैं? कितनी?*
3. *ग्राम पंचायत के पास किन कामों के लिए पैसे आते हैं? ये पैसे कहाँ से आते हैं?*
4. *क्या ये लोग कभी एक जगह मिलकर मीटिंग करते हैं? जितने लोग मीटिंग में आते हैं सबके नाम पता करो।*
5. *ये लोग एक महीने में कितनी बार मीटिंग करते हैं? ग्राम पंचायत क्या–क्या काम करती है? कैसे काम करती है? अपने घर के बड़ों से या गाँव के बड़े लड़के/लड़कियों से पूछकर पता लगाओ।*
6. *यदि तुम्हारे गाँव में पानी की समस्या हो तो तुम क्या करोगे?*

एक बड़े इलाके का नक्शा

इन नक्शों में शाहपुर दिखाया गया है और उसके आसपास के गाँव, सड़क, नदी और जंगल भी। पर नक्शा बनाने में बहुत सी चीज़ें छूट गई हैं। कुछ गाँवों के नाम नहीं लिखें हैं। जहाँ वे हैं वहाँ गोले बने हैं। उन गाँवों के नाम याद करके या पता करके लिख लो।

(क) अपने गाँव को नक्शे में ढूँढो। अगर तुम्हारे गाँव का नाम नक्शे में नहीं है तो पास के गाँवों को नक्शे में ढूँढो। अपने गाँव का नाम नक्शे में सही जगह पर लिख लो।

(ख) अपने गाँव के आसपास जो भी गाँव हैं, तालाब है, जंगल हैं नक्शे में भरो। जिनके नाम नहीं लिखे हैं उनके नाम लिखो। नक्शे में सबके चिह्न बनाओ।

(ग) जंगल में हरा रंग भरो। नदी में नीला रंग भरो।

(घ) तुम्हारे गाँव से शाहपुर किस रास्ते से जाएँगे, नक्शे में उंगली फेर कर बताओ।

(च) नक्शे में केवल पक्की सड़कें दिखाई गई हैं। जिन गाँवों तक कच्ची सड़कें हैं, उन्हें चिह्न देखकर बनाओ।

(छ) अपने क्षेत्र शाहपुर के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा बातें पता करो।(जैसे कौन–से उद्योग हैं, बस स्टैंड, बाज़ार, बाहर से आने वाली चीज़ें, क्या फसल उगती है? आदि)

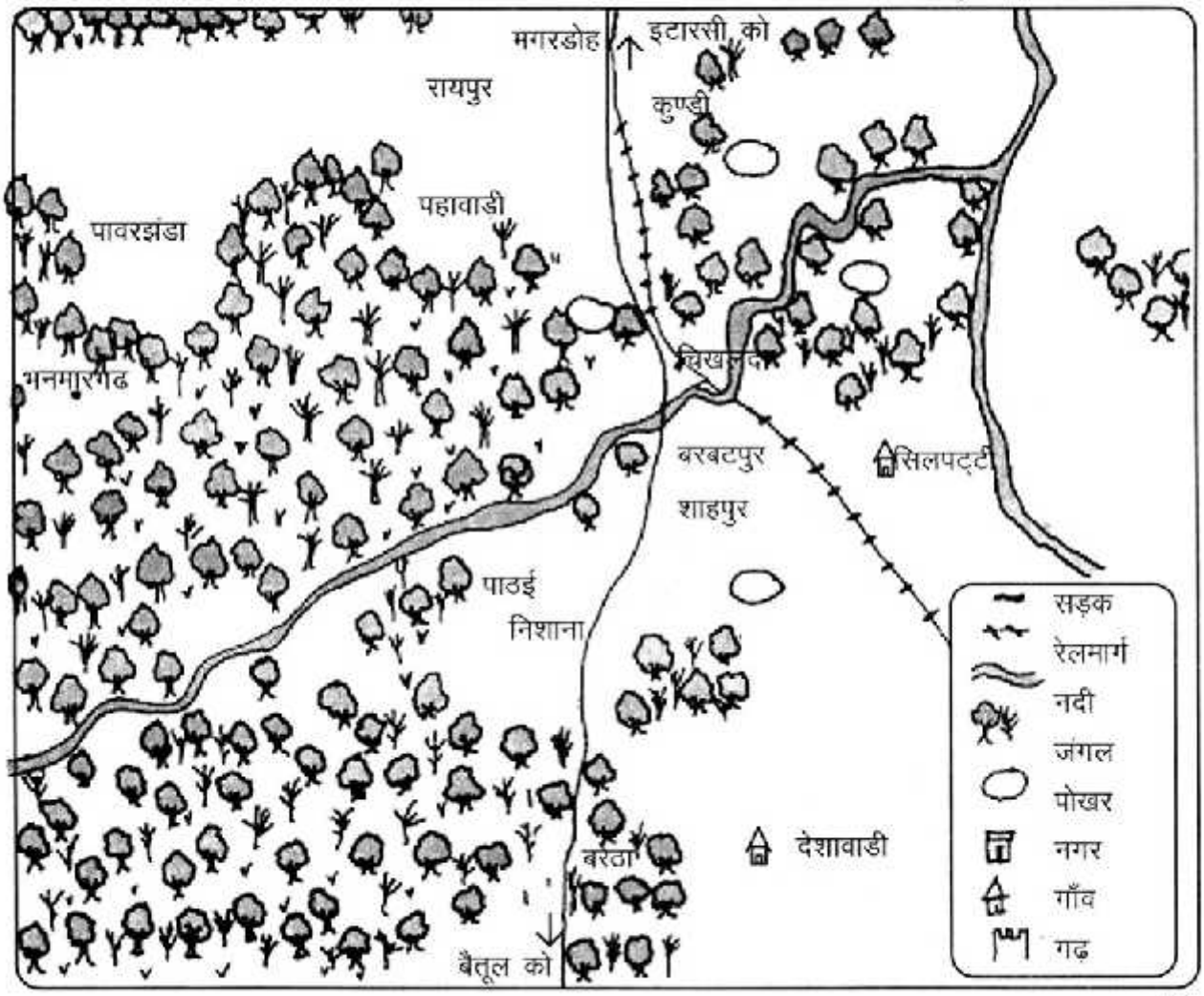

मेरा गाँव कैसे बसा?

आज से लगभग 200 साल पहले, आज जो काला आखर गाँव है, उसका नामोनिशान नहीं था। आज जहाँ पक्की सड़कें हैं वहाँ कभी घना जंगल हुआ करता था। लोग तो कहते हैं कि यहाँ दिन–दहाड़े शेर, चीते जैसे जंगली जानवर घूमा करते थे। लोग दिन में भी यहाँ से गुज़रने में डरते थे। कभी–कभी अंग्रेज़ लोग यहाँ शिकार खेलने आते थे। अब सवाल यह है कि जब यहाँ यह सब था तो यहाँ गाँव बसा कैसे होगा?

काला आखर की शुरुआत उन दिनों हुई जब इटारसी से बैतूल रेल लाइन बिछाई जा रही थी। इतने घने जंगल में लाइन बिछाने का काम इतना आसान और जल्दी होने वाला नहीं था। यह काम कई सालों तक चला। सबसे पहले जगह देखने कुछ अंग्रेज़ अफसर आए, फिर कुछ और लोगों ने सर्वे किया और फिर शुरू हुआ जंगल की सफाई का काम।

फिर जहाँ–जहाँ से लाइन जानी थी उस जगह का जंगल काटा गया। जहाँ पहाड़ था उसे फोड़कर वहाँ सुरंग बनाई गई। कहीं–कहीं जहाँ पर खाई थी, वहाँ मिट्टी डालकर उसे बराबर किया गया। कई जगह तो इतनी मिट्टी डालनी पड़ी कि आसपास छोटे–छोटे तालाब बन गए। ऐसा ही एक तालाब काला आखर में भी है। फिर हर नदी–नाले पर पुल बनाना था। यदि बड़ी–सी नदी हो तो पुल बनाने में ही दो–तीन साल तक लग जाते हैं। इस तरह कई साल काम चलता रहा। इस काम के लिए बहुत लोग आए – कुछ पास से, कुछ बहुत दूर से। पास के गाँवों के लोग तो शाम को वापस चले जाते। दूर से आने वाले हफ्ता पंद्रह दिन में ही घर जा पाते। कुछ लोग तो 2–3 महीने काला आखर में ही रहते थे। इस बीच कई सारे काम वाले झोंपड़ी बनाकर रहने लगे थे। कुछ ने तो

ईंट के घर भी बनाने शुरू कर दिए थे।

जब लोग यहीं रुकने लगे तो एक ने छोटी–सी दुकान खोल दी। दुकान में ज़रूरत का सामान मिल जाता था। जैसे – गुड़, नमक, तेल, चावल, वगैरह। यहीं दुकान के पास में एक होटल भी खुल गई। उस होटल में बिकता था – सेव, पपड़ी, फूटा (भुने चने) गुड़पट्टी, सत्तू, मिठाई वगैरह। खाने के लिए आज की तरह प्लेट में नहीं दिया जाता था। खकरा या माहुर के दोनों में खाने का सामान दिया जाता था। यदि इस होटल पर कोई कहता 'दो कट देना।' तो शायद कोई भी नहीं समझता कि तुम क्या मांग रहे हो। क्योंकि उन दिनों में होटल पर चाय नहीं मिलती थी कई लोग तो मानते थे कि चाय केवल अंग्रेज़ ही पीते हैं।

कई सालों के काम के बाद एक मई उन्नीस सौ तेरह (1.5.1913) को यह रेल लाइन शुरू हो गई। काला आखर में एक स्टेशन भी बना जहाँ रेल गाड़ियाँ रुकने लगीं। यह स्टेशन इटारसी–नागपुर रेल लाईन पर है। उन दिनों जब कोई गाड़ी निकलती तो लोग बड़ी हैरानी से देखते। रेलगाड़ी देखने के लिए लोग दूर–दूर से आते। कई सालों बाद तक लोग गाड़ी में बैठने से डरते थे। कुछ लोग भारी भरकम गाड़ी को देवी–देवता मानते। कोई कहता, यह तो साक्षात काली है।

जब रेलगाड़ी चलना शुरू हो गई तो रेल विभाग को बहुत से लोगों की ज़रूरत पड़ी। जैसे – स्टेशन पर स्टेशन मास्टर, कैबिन मैन, पोर्टर, सफाई वाला जैसे काम वाले लगाए गए। फिर रेल लाइन के रख–रखाव के लिए एक अलग विभाग था। उसमें भी बहुत से लोगों को काम दिया गया। फिर इन

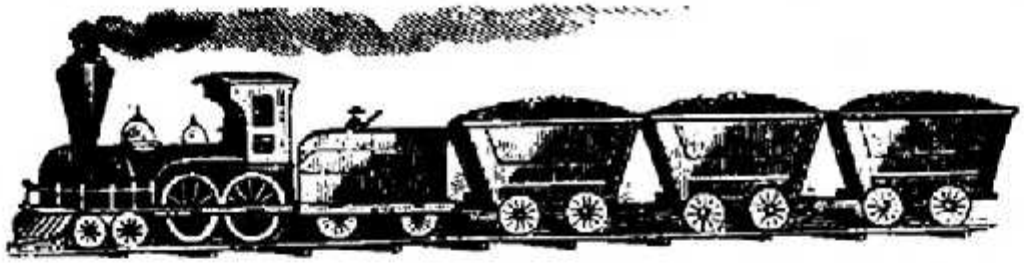

लोगों के रहने के लिए घर बनवाए गए। कुछ लोगों ने अपने घर बना लिए थे, कुछ रेलवे क्वार्टर में रहने लगे।

रेल लाईन बनने के बाद यहाँ की लकड़ी और लकड़ी से बना कोयला बाहर जाने लगा। कुछ दिनों बाद यहाँ वन विभाग (फॉरेस्ट डिपार्टमेंट) का काम शुरू हुआ। जैसा कि नाम से लगता है इनका काम जंगल से संबंधित है। ये एक क्षेत्र के जंगल की रखवाली व कटाई की देख–रेख करते हैं।

उन दिनों काला आखर स्टेशन के सामने हज़ारों ट्रक कोयले के ढेरों की

लम्बी कतार लगा करती थी। आज भी स्टेशन पर एक धक्का बना हुआ है, जहाँ से उन दिनों मालगाड़ी में कोयला, लकड़ी आदि भरा जाता था। कुछ लोगों का मानना है कि कोयले के इन ढेरों के कारण ही काला आखर का नाम काला आखर पड़ा।

रेल विभाग की तरह वन विभाग का भी कार्यालय बना। उनके कर्मचारियों के रहने के लिए घर बने और फिर धीरे–धीरे फॉरेस्ट कॉलोनी बन गई। फिर क्या था, घर बनाने का सिलसिला शुरू हो गया। कुछ साल बाद रेल विभाग और वन विभाग के जो भी कर्मचारी रिटायर होते उनमें से बहुत से यहीं बस जाते।

साथ में यहाँ और भी लोग बसने लगे– दर्ज़ी, किसान, कुम्हार, ईंट बनाने वाले, ठेकेदार, दुकानदार, बढ़ई आदि।

ये थी कहानी काला आखर के बसने की। पहले कभी जहाँ खूब घना जंगल हुआ करता था आज वहाँ कहीं–कहीं कुछ ठूँठ ही बाकी हैं। जिस जंगल में चीते–शेर दहाड़ते थे वहाँ आज कुत्ते भौंकते हैं।

1. *काला आखर के बसने की कहानी तीन–चार लोगों से सुनी थी। कुछ जानकारी अलग–अलग किताबों से पढ़ी। तुम भी अपने गाँव शहर के बारे में पता करना। कब बसा? लोग कहाँ–कहाँ से आए? किस लिए आए? क्या तुम्हारे गाँव/ शहर में रेल लाईन/रेलवे स्टेशन है? अगर हाँ, तो यह कब बना? सड़क, पुल, बिजली, नहर, चक्की (या मिल, यदि है तो) आदि के बारे में भी पता करो – ये चीज़ें तुम्हारे यहाँ कब बनीं?*
2. *काला आखर का नक्शा पढ़ो*
   नक्शा पढ़ने के पहले इसके संकेतों को देखो। कौन–सा चिह्न किस लिए बना है। अब इस नक्शे में बतायी दिशा अनुसार नक्शे को उत्तर दक्षिण दिशा में रखो।
   पूर्व और पश्चिम नक्शे में कहाँ आएँगे? नक्शे पर लिखो।
3. *इन सवालों का जवाब दो।*
   (क) नक्शे में रेलवे के कितने घर हैं?
   (ख) काला आखर में सबसे ज़्यादा घर किसके हैं, रेलवे के, वन विभाग के या अन्य?
   (ग) सुखतवा रेल लाइन की किस दिशा में है?
   (घ) काला आखर से सुखतवा किस दिशा में है?
   (च) रेल लाइन के पूर्व में ज़्यादा कुएँ हैं या पश्चिम में? कितने ज़्यादा हैं?
4. *सही–गलत का चिह्न लगाओ।*
   (क) काला आखर में रेलवे स्टेशन है।
   (ख) नक्शे में पानी की तीन टंकियाँ हैं।
   (ग) नक्शे में दो मंदिर और एक मज़ार है।
   (घ) नक्शे में कुल 37 घर हैं।
   (च) नक्शे में दो तालाब दिख रहे हैं।
   (छ) रेलवे कॉलोनी स्टेशन से दक्षिण दिशा में है।
   (ज) रेलवे चौकी पक्की सड़क के किनारे है।
   (झ) सभी हैंडपंप पक्की सड़क के किनारे हैं।
   (ट) यहाँ दो स्कूल भवन हैं।
   (ठ) यहाँ के बहुत लोग रेलवे में काम करते हैं।

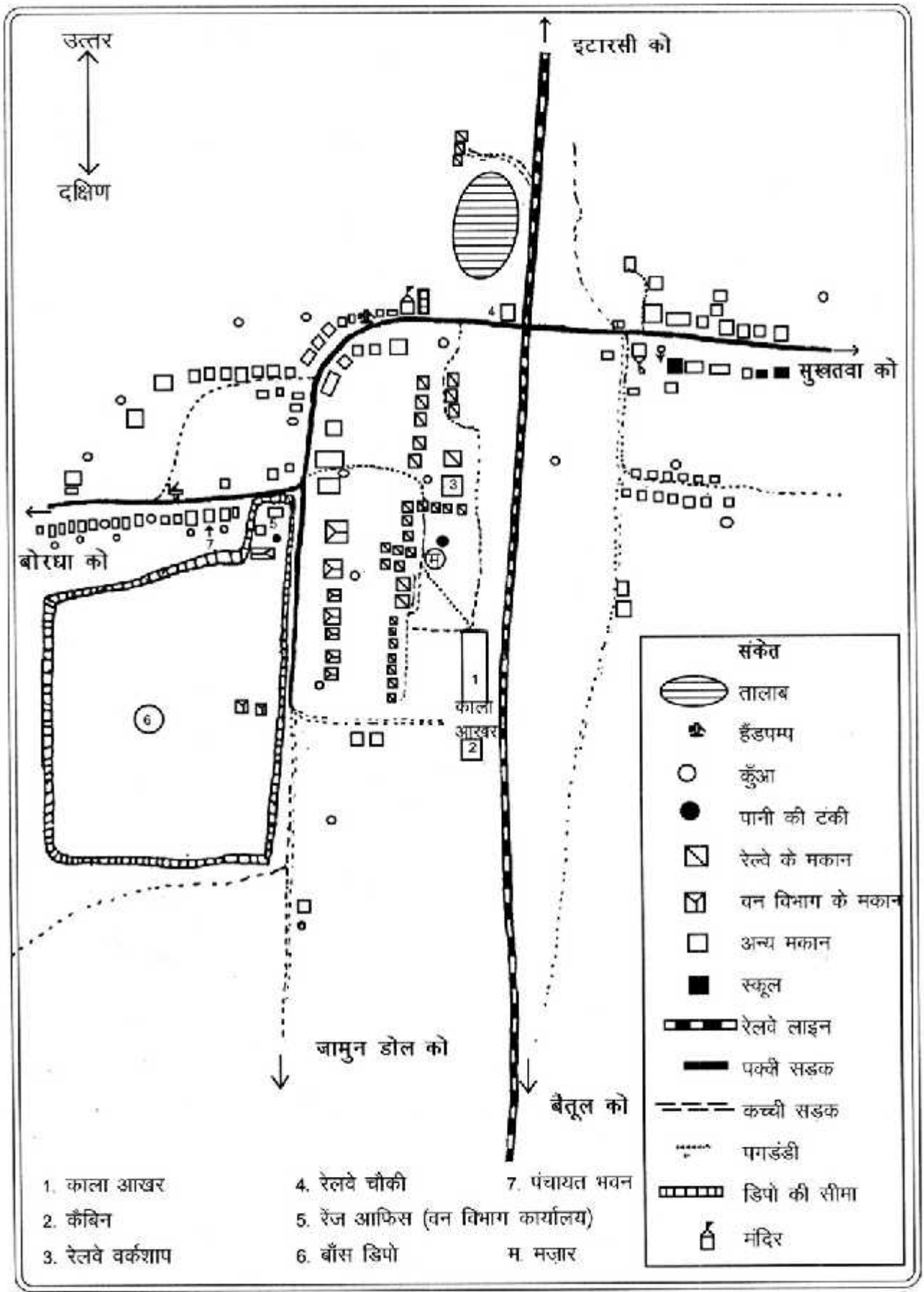
उत्तर
दक्षिण
इटारसी को
सुखतवा को
बोरघा को
जामुन डोल को
बैतूल को
काला आखर
संकेत
तालाब
हैंडपम्प
कुँआ
पानी की टंकी
रेल्वे के मकान
वन विभाग के मकान
अन्य मकान
स्कूल
रेलवे लाइन
पक्की सड़क
कच्ची सड़क
पगडंडी
डिपो की सीमा
मंदिर
1. काला आखर
2. कैबिन
3. रेलवे वर्कशाप
4. रेलवे चौकी
5. रेंज आफिस (वन विभाग कार्यालय)
6. बाँस डिपो
7. पंचायत भवन
म. मज़ार